<u>टेक्नोसाज:</u> ज्वैलरी बिजनेस में EDI (इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज) के फायदे

आज जिस तकनीक की चर्चा होने जा रही है वैसे तो वह काफी पुरानी तकनीक है, लेकिन उसका महत्व आज भी बरकरार है। 1960 के दशक से, डेटा को एक बिजनेस सिस्टीम से (व्यापार प्रणाली से) दूसरे बिजनेस सिस्टीम में इफेक्टिव्हली ट्रान्सफर (स्थानांतरित) करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज तकनीक का उपयोग किया जाता है। इस में एक से अधिक संस्थाओं के बीच (एक संस्था से दुसरी संस्था में) डेटा (जानकारी) पेपर का इस्तेमाल किए बिना इलेक्ट्रॉनिक फॉरमॅट में इंटरचेंज याने भेजा या मंगवाया (आदान-प्रदान) जाता है। इसलिए EDI करने में डेटा के फॉरमॅट का विशेष महत्व होता है। इसके साथ ही संबंधित डेटा ईमेल, सीडी, पेन ड्राइव किस माध्यम से भेजा जाएगा? फाइल के स्वरुप में जाएगा क्या? यह भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, डायमंड ज्वैलरी में सप्लायर डायमंड के साथ पैकिंग लिस्ट तैयार कर के भेजते रहते है। इसके बाद, डायमंड ज्वेलरी में से हर एक ऑर्नामेंट के हर एक डायमंड के ४ C's (कट, कलर, क्लॅरिटी, कॅरेट) की जानकारी दर्ज कर के डेटा सिस्टीम में फीड करना होता है। अब अगर ये पैकिंग लिस्ट सप्लायर की ओर से एक्सेल में आती है और उसे जैसा है वैसा ही इम्पोर्ट किया जाता है तो डेटा फीडिंग का काफी काम बच जाता है। और उनमें से सभी छोटे छोटे विवरण भी हाथोंहाथ उपलब्ध होते हैं। इसे ही EDI याने इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज कहा जाता है। यहां एक्सेल याने एक्सेल कि फाइल यह उस डेटा का फॉर्मेट है। जिसके द्वारा डेटा आसानीसे इम्पोर्ट हो ऐसे अन्य इलेक्ट्रॉनिक फाईल फॉरमॅट्स भी ईमेल पर मंगवाए जा सकते है।

EDI के कई फायदे हैं। इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज कि वजह से भारी मात्रा में समय की बचत होती है और समय में बचत हुई है तो अप्रत्यक्ष रुप से पैसे की भी बचत होती है। त्रुटियां कम हो जाती हैं। डेटा EDI के माध्यमसे आने कि वजह से उसकी ट्रेसेबीलिटी रेहती है मतलब डेटा कहां से आया है? कैसे आया है? ऐसी बातें समझ में आती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि EDI के उपयोग से प्रोसेसेस का स्टँर्डडायजेशन होता है। याने काम की प्रोसेसेस सुचारु (स्मूथ) हो जाती है मतलब काम बडी आसानी से याने बिना किसी बाधा से हो जाते है।

EDI करने के लिए एक निश्चित सॉफ़्टवेयर की आवश्यकता होती है जिससे डेटा पूल किया जा सके। इसके साथ एक राउटिंग मैकेनिजम की भी आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से डेटा एक संस्था से दूसरे संस्था में भेजा जा सके।

ज्वेलरी व्यवसाय में EDI के कई उपयोग हैं। लेकिन उन्हे जानने से पहले 'EDI का भविष्य क्या है?' यह जानना दिलचस्प होगा। रोबोटिक ऑटोमेशन का उपयोग करके इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज की प्रोसेसेस को ऑटोमॅटिक किया जा सकता है। जिसके बारे में अधिक जानकारी इंटरनेटसे हासिल की जा सकती है। EDI के माध्यम से डेटा ट्रांसफर करते समय ब्लॉकचेन जैसी तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर खदान से निकलने वाला हीरा उसके सर्टिफिकेशन के साथ ग्राहकको मिलने तक की सारी जानकारी केवल ऑटोमॅटिक ही नही बल्की पुरे सेक्युर्ड तरिके से स्थानांतरीत होने के लिए ब्लॉकचैन जैसी तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तमान ई-युग में इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज करते समय API जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। जीस वजहसे इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज की प्रोसेस बहुत आसान और अधिक ऑटोमेटेड हुई है।

आइए अब ज्वैलरी बिजनेस में होने वाले EDI के कुछ उपयोगों की जानकारी ले। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सप्लायर से आनेवाली आभूषणों की पैकिंग लिस्ट EDI के माध्यम से सिस्टम में ऑटोमॅटिक ली जाती है। जिससे परचेस बिल के विवरण भरने के तथा बारकोडिंग करने के समय और प्रयास दोनों में बचत होती है। पैकिंग लिस्ट EDI के माध्यम से इम्पोर्ट करने के बाद अब कॉलिटी चेक डिपार्टमेंट में केवल आभूषणों की गुणवत्ता अच्छेसे जांचने का काम बाकी रेहता है। इसी तरह EDI के माध्यम से परचेस बिल भी इम्पोर्ट किया

जा सकता है। सप्लायर्स से आनेवाले पैकिंग मटेरियल या अन्य वस्तुओं के परचेस बिल भी EDI के माध्यम से सिस्टम में ऑटोमॅटिक लिए जा सकते हैं। हालाँकि यहाँ ध्यान में रखने वाली बात यह है कि सप्लायर का सेल बिल आपके पास परचेस बिल के रुप में आएगा।

आजकल ग्राहक सेविंग स्कीम के पेमेंट्स उसके बैंक के माध्यम से ऑनलाइन करता है या NEFT करता है। अब यदि बैंक के पास व्हर्च्युअल अकाउंट नंबर की सिस्टीम है, तो बैंक सेविंग स्कीम्स की इंस्टॉलमेंट दिए हुए ग्राहकों की लिस्ट संबंधित व्हर्च्युअल अकाउंट नंबर के साथ हमें देता है। बैंक से आयी हुइ यह फाईल अगर हम पुरी की पुरी इम्पोर्ट करते है तो हमारे सिस्टम में संबंधित ग्राहकों के सेविंग स्कीम्स के इन्स्टॉलमेंटस ऑटोमॅटिकली जनरेट होते हैं।

बँक से जुडी एक और महत्वपूर्ण बात जो EDI की वजह से आसान हो जाती है वह है बैंक रीकन्सिलीएशन! यदि बैंक का स्टेटमेंट आप EDI के माध्यम से अपने सॉफ़्टवेयर इम्पोर्ट कर लेते हैं, तो रीकन्सिलीएशन की प्रोसेस आसान और तेजीसे हो जाती है। जिस वजह से समय और प्रयासों में काफी बचत होती है। साथ ही काम में सटीकता आती है। इसी प्रकार, यदि एक ही समय पर काफी पेमेंट्स यानी बहुत सारी NEFT या RTGS करनी हो तो, EDI द्वारा पेमेंट का डेटा विशिष्ट फॉरमॅट में बैंक के पोर्टल में दिया जा सकता है जिस वजह से Bulk NEFT या RTGS का काम हाथोंहाथ होता है।

ज्वैलरी फ्रैंचाइजी के संदर्भ में भी EDI का बहुत बड़ा फायदा होता है। फ्रैंचाइजी के मामले में, कंपनी ने फ्रैंचाइजी को दिया हुआ सेल बिल इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज के कारण फ्रैंचाइजी के सिस्टम में ऑटोमॅटिकली परचेस बिल के रुप में लिया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात जो होती है वह है प्रोसेसेस का स्टँर्डडायजेशन! प्रोसेसेस के स्टँर्डडायजेशन की वजह से मुख्य ज्वेलरी शॉप और फ्रैंचाइजी में आइटम के नाम, आइटम की कॅटेगिरी सभी एकसमान रहती हैं। जिससे सभी डेटा बिल्कुल सुसंगत रेहने में मदद मिलती है।

ज्वैलरी व्यवसाय में EDI का एक अन्य महत्वपूर्ण उपयोग है ई-कॉमर्स व्हेंडर्स के साथ होनेवाला इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज। Amazon, Flipkart जैसे ई-कॉमर्स वेंडर्स को आइटम का डेटा भेजना होता है। या इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज द्वारा आइटम का डेटा ज्वेलरी शॉप की वेबसाइट पर भी ट्रान्सफर किया जा सकता है। ऑनलाइन दिए जाने वाले गहनों के फोटो भी दिए जा सकते हैं। आगे चल दिन भर में होनेवाले ऑनलाइन ऑर्डर्स की फाईल संबंधित ई-कॉमर्स पोर्टल से आती है जो अपने सिस्टम में सेल बिल के फॉरमॅट में सेल बिल या ऑर्डर के तौर पर ली जा सकती है। यहां भी, सारा डेटा अपने आप उपलब्ध होने की वजह से समय और मेहनत में काफी बचत होती है।